Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January-June 2024 5(1), 2299–2304

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों पर सामाजिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

Sunayana Kumari[1], Dr. Aruna Kumari[2]

[1] Research Scholar, Institute of Education and Research, Mangalayatan University, Aligarh, Uttar Pradesh
[2] Supervisor, Institute of Education and Research, Mangalayatan University, Aligarh, Uttar Pradesh

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.2397

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

शिक्षा एक सोद्देश्य व सप्रयास की प्रक्रिया है| शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए व्यवस्थित ढंग से योजना बनाकर प्रयास करना होता है| बिना किसी व्यवस्था के शिक्षा प्रक्रिया से वांछित उद्देश्य प्राप्त करना कदापि संभव नहीं हो सकता| शिक्षा प्रक्रिया की सफलता काफी सीमा तक इस बात पर निर्भर करती है कि उस पर किसका नियंत्रण है| नि:संदेह शिक्षा का संबंध व्यक्ति तथा समाज दोनों से होता है| व्यक्ति समाज का एक अंग होता है तथा समाज का निर्माण व्यक्तियों के द्वारा ही संभव होता है| इसलिए शिक्षा की व्यवस्था इस प्रकार से की जानी चाहिए कि उसके द्वारा व्यक्ति तथा समाज दोनों का ही अधिकतम विकास हो सके| दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति की पूर्णता के साथ-साथ समाज का कल्याण करना होना चाहिए| व्यक्तियों तथा समाज की व्यवस्था एवं उन पर नियंत्रण रखने का उत्तरदायित्व राज्य पर होता है |राज्य व्यक्ति एवं समाज के कल्याण के लिए कानून बनता है एवं उनके अनुपालन को सुनिश्चित करता है|

1. प्रस्तावना

शिक्षा प्रणाली को समाज और राष्ट्र के विकास का एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन माना जाता है| यही कारण है कि प्रत्येक काल, समाज एवं राष्ट्र में शिक्षा को अत्यंत महत्वपूर्ण एवं सम्मानजनक स्थान दिया जाता है एवं समाज अपने नागरिकों को उच्च गुणवत्ता की शिक्षा उपलब्ध कराने के प्रति प्रयत्नशील रहता है| राष्ट्र के शीर्ष नेताओं ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भी तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत राष्ट्रीय पुनः निर्माण के कार्य में शिक्षा को एक शक्तिशाली साधन के रूप में स्वीकार किया तथा जनमानस की आवश्यकताओं तथा आकांक्षाओं के अनुरूप शिक्षा की व्यवस्था करने पर जोर दिया| समाजवादी प्रजातांत्रिक व्यवस्था को पोषित करने की दृष्टि से यह आवश्यक है कि राष्ट्र समस्त नागरिकों को अधिकतम विकास करने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराये| कर्तव्य निष्ठ तथा अधिकार सजग नागरिक ही अपने समाज तथा राष्ट्र की प्रगति के पथ पर ले जा सकते हैं| नि:संदेह शिक्षा राष्ट्र निर्माण के महायज्ञ में सर्वाधिक सार्थक योगदान कर सकती है| यही कारण है कि हमारा राष्ट्र अपने नागरिकों को शैक्षिक विकास की दिशा में अग्रसर करने के लिए प्रभावी उपाय करने के लिए सतत प्रयत्नशील है| सभी

नागरिकों को बिना किसी भेदभाव के समान गुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त करने के पर्याप्त अवसर मिल सके, हमारा राष्ट्र इसके लिए संकल्प बद्ध है|

शिक्षा एक सोद्देश्य व सप्रयास की प्रक्रिया है| शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए व्यवस्थित ढंग से योजना बनाकर प्रयास करना होता है| बिना किसी व्यवस्था के शिक्षा प्रक्रिया से वांछित उद्देश्य प्राप्त करना कदापि संभव नहीं हो सकता| शिक्षा प्रक्रिया की सफलता काफी सीमा तक इस बात पर निर्भर करती है कि उस पर किसका नियंत्रण है| नि:संदेह शिक्षा का संबंध व्यक्ति तथा समाज दोनों से होता है| व्यक्ति समाज का एक अंग होता है तथा समाज का निर्माण व्यक्तियों के द्वारा ही संभव होता है| इसलिए शिक्षा की व्यवस्था इस प्रकार से की जानी चाहिए कि उसके द्वारा व्यक्ति तथा समाज दोनों का ही अधिकतम विकास हो सके| दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति की पूर्णता के साथ-साथ समाज का कल्याण करना होना चाहिए| व्यक्तियों तथा समाज की व्यवस्था एवं उन पर नियंत्रण रखने का उत्तरदायित्व राज्य पर होता है |राज्य व्यक्ति एवं समाज के कल्याण के लिए कानून बनता है एवं उनके अनुपालन को सुनिश्चित करता है|

2. माध्यमिक शिक्षा का विकास

भारतीय माध्यमिक शिक्षा का वर्तमान रूप उस ब्रिटिश शिक्षा व्यवस्था की देन है जिसकी आधारशिला सन 1854 में वुड के घोषणा पत्र के द्वारा रखी गई थी| उसे समय समभ्रांत वर्ग के कुछ चुने गए व्यक्तियों के लिए माध्यमिक शिक्षा की व्यवस्था करने की बात की गई थी| तब से लेकर अब तक माध्यमिक शिक्षा के रूप में अनेक छोटे-बड़े परिवर्तन आए हैं| परंतु मूल रूप से इसकी प्रवृत्ति लगभग वही बनी रही है| माध्यमिक शिक्षा की अवधि में भी अनेक बार संकुचन तथा विस्तार हुए हैं| वर्तमान समय में भी माध्यमिक शिक्षा की अवधि विभिन्न राज्यों में कुछ भिन्न-भिन्न है| माध्यमिक शिक्षा प्रदान करने के प्रमुख केंद्र माध्यमिक विद्यालय होते हैं जो राज्यों के शिक्षा विभागों तथा माध्यमिक शिक्षा परिषदों के द्वारा नियंत्रित होते हैं |

मानव विकास की किशोरावस्था से संबंधित होने के कारण तथा भावी युवा शक्ति के नेतृत्व के प्रशिक्षण का प्रथम केंद्र होने के कारण माध्यमिक शिक्षा राष्ट्र की सामाजिक,आर्थिक, तकनीकी तथा सांस्कृतिक क्षमता को सर्वाधिक प्रभावित करती है| माध्यमिक शिक्षा रोजगार तथा जीवनयापन के क्षेत्र में प्रवेश का द्वार खोलती है |किसी भी राष्ट्र की मानवशक्ति का एक बहुत बड़ा भाग माध्यमिक शिक्षा स्तर से ही प्राप्त होता है| माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा स्तर की गुणवत्ता को निर्धारित करती है| यदि माध्यमिक शिक्षा गुणवत्ता युक्त होती है तो प्राथमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा तथा तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा भी गुणात्मक दृष्टि से श्रेष्ठ होती है| परंतु जिस देश के माध्यमिक शिक्षा गुणात्मक दृष्टि से कमजोर होती है उस देश की संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था भी कमजोर हो जाती है| अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि हमारे देश में भी माध्यमिक शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा क्रम की एक अत्यंत मजबूत कड़ी है |

3. माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्य

मुदालियर आयोग (1952 - 1953) ने माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्य की चर्चा करते हुए कहा था कि नागरिकों की आदतों, प्रवृत्तियां एवं चारित्रिक गुणो के विकास में शिक्षा को योगदान करना चाहिए जिससे वे प्रजातांत्रिक नागरिकता के उत्तरदायित्वों का निर्वाह कर सके तथा उन ध्वंसात्मक प्रवृत्तियों का विरोध कर सके जो व्यापक राष्ट्रीय तथा धर्म निरपेक्ष दृष्टिकोण के विकास में बाधक हो| आयोग ने शिक्षा के द्वारा चारित्रिक गुणो के विकास राष्ट्रीयता और धर्म निरपेक्षता की प्रगति तथा राष्ट्र की उत्पादन शक्ति में वृद्धि की आवश्यकता को ध्यान में रखकर माध्यमिक शिक्षा के निम्न उद्देश्य बताए थे- (i) प्रजातांत्रिक नागरिकता का विकास करना

(ii) व्यावसायिक कुशलता का विकास करना

(iii) व्यक्तित्व का विकास करना

(iv) नेतृत्व का विकास करना

कोठारी आयोग (1964-1966) ने कहा था कि राष्ट्रीय लक्ष्य की प्राप्ति के लिए शिक्षा को इस प्रकार से विकसित करना आवश्यक है की उत्पादकता में वृद्धि हो, सामाजिक और राष्ट्रीय एकता बढ़े, आधुनिकी करण की प्रक्रिया तेज हो सके, तथा सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की स्थापना हो सके| आयोग ने शिक्षा का व्यक्तियों के जीवन की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं से जोड़ने की आवश्यकता पर भी बल दिया | जिससे शिक्षा सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तन के लिए एक शक्तिशाली साधन के रूप में विकसित हो सके| इसलिए कोठारी आयोग ने शिक्षा के निम्नांकित चार राष्ट्रीय लक्ष्य बताए थे-

(i) शिक्षा को उत्पादन से जोड़कर आर्थिक विकास को बढ़ाना

(ii) शिक्षा के द्वारा सामाजिक और राष्ट्रीय एकता को बढ़ाना

(iii) शिक्षा के द्वारा आधुनिकरण की गति को तीव्र करना

(iv) शिक्षा के द्वारा आध्यात्मिक सामाजिक तथा नैतिक विकास करना

माध्यमिक शिक्षा का उद्देश्य छात्रों का सर्वांगीण विकास करके राष्ट्रीय विकास और एकीकरण को सुनिश्चित करना है | सामान्य शिक्षा का अंतिम सोपान होने के कारण माध्यमिक शिक्षा एक ओर जहां उच्च शिक्षा के द्वार खोलती है वहीं दूसरी ओर व्यक्तियों को रोजगार और जीवनयापन के क्षेत्र के लिए तैयार करती है| अत: माध्यमिक शिक्षा का उद्देश्य जहां एक ओर छात्रों को उच्च अध्ययन के लिए तैयार करना होना चाहिए वहीं दूसरी ओर छात्रों को जीविकोपार्जन के लिए भी तैयार करना होना चाहिए| हमारी वर्तमान माध्यमिक शिक्षा इन दोनों ही उद्देश्यों की पूर्ति करने में असमर्थ हो रही है| वास्तव में वर्तमान माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्य स्पष्ट नहीं है| हमारे माध्यमिक विद्यालय में दी जाने वाली शिक्षा अत्यंत संकुचित तथा एकांकी प्रकृति की हो यह छात्रों को रोजगार देने में असमर्थ रही है |माध्यमिक विद्यालय छात्रों का सर्वांगीण विकास करके उन्हें उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए तैयार करने में सफल रहे हैं| माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्य को स्पष्ट रूप से निर्धारित किया जाए तथा उसकी प्राप्ति के लिए सतत एवं योजनाबद्ध ढंग से सार्थक प्रयास किए जाए|

4. सामाजिक

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, बिना समाज के किसी भी व्यक्ति के सर्वांगीण विकास की कल्पना नहीं की जा सकती| समाजीकरण केवल अनुकरण करना या कौशल क्षमता प्राप्त करना ही नहीं बल्कि इसके माध्यम से व्यक्ति जीवन से संबंधित विभिन्न प्रकार के व्यवहारों,जैसे- परोपकार करना, नैतिकता, भाईचारा, परस्पर सहयोग, आत्मनिर्भरता सभी एवं सुशील बना आदि भी सीखना है |साथ ही अपने संस्कार,धर्म, संस्कृति, मानवीय मूल्य इत्यादि की भी आत्मसात करता है |समाज के महत्वपूर्ण घटकों में परिवार, समाज एवं समुदाय की महत्वपूर्ण भूमिका होती है |जन्म के समय बच्चा ना सामाजिक होता है ना और ना असामाजिक| समाज के संपर्क में आने के बाद ही उसमें सामाजिकता या असामाजिकता आती है| दूसरे शब्दों में जब बच्चा संसार में आता है,तो वह संसार की परंपराएं, रीति रिवाज तथा जातीय क्रियाकलापों आदि सामाजिक प्रतिमानों से अनभिज्ञ होता है, परंतु जन्म के साथ ही उस पर सामाजिक प्रतिमानों का प्रभाव पड़ना आरंभ हो जाता है| आयु बढ़ने के साथ-साथ बच्चा सामाजिक परंपराओं का अनुकरण करने लगता है और कुछ समय बाद वह एक सामाजिक प्राणी बन जाता है| सामाजिक विकास का अभिप्राय सामाजिक संबंधों में परिपक्वता प्राप्त करना है |समाज व्यक्ति में विशिष्ट सामाजिक कौशलों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक होता है| जिससे प्रभावपूर्ण सामाजिक संबंधों और विकास में सहायता मिलती है| रॉस के अनुसार, " समाज सहयोग करने वाली व्यक्तियों में हम की भावना का विकास करता है और उनमें एक साथ कार्य करने की इच्छा तथा क्षमता का विकास करता है|" सामाजिक की प्रक्रिया के दौरान व्यक्ति की सामाजिक योग्यता और कौशल में बढ़ोतरी होती है| इन बढ़ी हुई योग्यताओं और क्षमताओं के सहारे व सामाजिक संबंधों को अच्छी तरह निभाने में कुशल बनता चला जाता है |वह अपने व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाने की चेष्टा करता है तथा दूसरों के साथ समायोजन करने और हिल- मिल कर प्रेम से रहने की लालसा रखता है

चाइल्ड (1954) के अनुसार "सामाजिक वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति में उसके समूह मानदंडों के अनुसार वास्तविक व्यवहार का विकास होता है|" सामाजिक प्रत्याषाओं से अभिप्राय उन आशाओं से है जो प्रत्येक समूह द्वारा अपने विशिष्ट सामाजिक सांस्कृतिक वातावरण में अपने बच्चों से उनकी आयु विशेष को ध्यान में रखते हुए करता है,जैसे बच्चे अपने माता-पिता से स्नेह करें, उनकी आज्ञा का पालन करें,निश्चित आयु में स्कूल जाना प्रारंभ कर दें आदि| जैसे-जैसे बच्चा विकसित होता है वह अपने संपर्क में आने वाले व्यक्तियों,माता-पिता, परिवार के सदस्यों, सहपाठियों आदि के विचारों तथा भावों को ग्रहण करता है |इस प्रकार बच्चों के अनुभवों पर, उनकी प्रत्यक्ष क्रियाओं तथा उसके समाजीकरण पर उसकी संस्कृति विशेष का प्रभाव पड़ता है|

सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक

क्रोनबैक (1988) ने यह बताया कि बालकों के स्कूली वातावरण का प्रभाव उनके सामाजिक विकास पर सीधा पड़ता है |यदि स्कूल का वातावरण ऐसा है जिसमें शिक्षक प्रजातंत्रात्मक ढंग से बालकों के साथ पेश आते हैं तथा बालकों में पाठ्यतर कार्यक्रमों पर भी आवश्यकतानुसार बल डालते हैं तो इससे बालकों का सामाजिक विकास तेजी से होता है क्योंकि उनमें समाजिक शीलगुणों का उचित विकास हो जाता है |बालकों का सामाजिक वातावरण उसके पालन- पोषण द्वारा अधिक प्रभावित होता है |विभिन्न समाज एवं संस्कृति में बालकों के पालन- पोषण की प्रणाली अलग-अलग होती है |कुछ मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि जिन बालकों की देखरेख उनके माता-पिता द्वारा स्वयं की जाती है,उनमें सामाजिक नियमों को सिखाने तथा उनके अनुरूप व्यवहार करने की तीव्र प्रेरणा होती है |सामाजिक वातावरण से भी भाषा का भी उचित प्रभाव पड़ता है |भाषा द्वारा बालक अपनी इच्छाओं, आवश्यकताओं आदि को दूसरों तक पहुंचाता है तथा दूसरे की इच्छाओं एवं आवश्यकताओं को समझने की कोशिश करता है| हर लोक(1978) में यह बताया है की भाषा बालकों को उपयुक्त सामाजिक व्यवहार उपयुक्त सामाजिक परिस्थितियों में करने में मदद करती है| स्कूलों में बालकों को शिक्षक भिन्न-भिन्न प्रकार के शिष्टाचार की बातें भाषा के माध्यम से बदलते हैं | किस परिस्थिति में किस प्रकार का सामाजिक व्यवहार करना चाहिए, की शिक्षा बालकों को घर में माता-पिता भाषा के ही माध्यम से देते हैं|

5. बालक के समाजीकरण में विद्यालय की भूमिका

परिवार के बाद स्कूल का बच्चों के व्यक्तित्व पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है| स्कूल में बच्चों के व्यक्तित्व के बौद्धिक, भावात्मक, शारीरिक,सामाजिक का विकास होता है| बच्चों के जीवन के जो वर्ष स्कूल में बिताते हैं,उनमें जीवन के प्रति सही मूल्य,कौशल और अभिवृत्तियों की नींव रखी जाती है| बच्चों के जीवन के स्कूल के कुछ वर्ष ही वह काल खंड है| जिसमें ज्ञान प्राप्त करने तथा जीवन की समस्याओं को हल करने के लिए ज्ञान का उपयोग करने के विषय में बच्चों की अभिवृत्ति और कौशल की नींव रखी जाती है| विद्यालय से संबंधित अनेक कारकों का प्रभाव बालक के विकास पर पड़ता है |जैसे कक्षा का वातावरण, अध्यापक, अनुशासन, स्कूल में पक्षपात, शैक्षिक उपलब्धि, सामाजिक उपलब्धि आदि कारक बालक के व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करते हैं| विद्यालय में बच्चे अपने सहपाठियों तथा शिक्षकों आदि के व्यवहार से भी प्रभावित होता है, बल्कि विद्यालय के सामान्य वातावरण भी बालक के व्यवहार को प्रभावित करता है |उसे विभिन्न सामाजिक -आर्थिक स्तर के बच्चों के साथ मिलने का अवसर मिलता है| विद्यालय में शिक्षक और छात्रों के मित्र भी बालक के सामाजिक विकास में योगदान देते हैं |स्कूल में बालक को अपनी आयु के अनेक बालकों के साथ बैठने और सीखने का अवसर ही नहीं मिलता है,बल्कि उसे बड़े बच्चों के सामाजिक अनुभव सुनने और सामाजिक व्यवहार देखने का अवसर भी मिलता है| इन अवसरों से उसकी सामाजिक सोच तथा सामाजिक प्रत्यक्षीकरण बढ़ता है| फलस्वरुप वह समाज के विभिन्न मूल्य से संबंधित व्यवहार को सीखता है| स्कूल के अनेक कार्यक्रमों में भाग लेकर वह अनेक सामाजिक व्यवहार प्रति मानव को सीखना है| स्कूल में वह सहयोग, मित्रता और आत्मनिर्भरता आदि सीखना है|

6. बालकों के सामाजिक वातावरण को विकसित करने में शिक्षक की भूमिका

बालकों के सामाजिक वातावरण में शिक्षक का काफी महत्वपूर्ण योगदान होता है |स्कूली अवस्था में बालकों का संपर्क शिक्षकों से सीधे होता है |अतः शिक्षकगण बालक के सामाजिक वातावरण को सीधे प्रभावित करते हैं| मनोवैज्ञानिक अध्ययनों से ऐसा पता चलता है कि बालकों के सामाजिक विकास को सही दिशा में विकसित करने में शिक्षक एवं स्कूल एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं |यदि स्कूल में एक ऐसा सामाजिक वातावरण शिक्षक बनाकर रखते हैं जिससे कि बालकों में अनुशासन का भाव विकसित होता है, तो उसे बालकों में सामाजिक विकास तीव्र गति से होता है |इसे स्पष्ट हो जाता है कि शिक्षक बालकों के सामाजिक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं| बालकों का सामाजिक विकास करने के लिए स्कूल में पर्याप्त मात्रा में पाठ्यतर कार्यक्रम जैसे नाटक,राष्ट्रीय सामाजिक सेवा, खेलकूद,वाद विवाद,प्रतियोगिता आदि का संचालन होना चाहिए| रॉबिंसन तथा मौस (1990)के अनुसार इन पाठ्यचर्या कार्यक्रमों से बालकों में सामाजिक सहभागिता का भाव उत्पन्न होता है| शिक्षकों को बालकों को सामाजिक उत्तरदायित्व उत्पन्न करने वाली परिस्थितियों से अवगत कराना चाहिए तथा उन्हें उत्तरदायित्वपूर्ण गृह कार्य देकर सामाजिक शीलगुणो का विकास संबंधी मौका देना चाहिए| स्कूल में शिक्षक- अभिभावक सभा समय समय आयोजित होने चाहिए |ऐसी सभाओं से शिक्षकों को छात्रों की सामान्य समस्या तथा विशिष्ट समस्या दोनों पर ही विशेष रूप से विचार विमर्श करना चाहिए| ऐसा होने से छात्रों को घर तथा स्कूल दोनों में ही सामाजिक विकास के उत्प्रेरक वातावरण मिल पाएगा और उनका सामाजिक विकास अच्छे ढंग से हो पाएगा| शिक्षक बालकों का सामाजिक विकास करने के लिए कुछ खास -खास विषयों,जैसे सामाजिक अध्ययन तथा नागरिक शास्त्र जैसे विषयों के अध्ययन पर अधिक जोर डालकर बालकों को विभिन्न तरह की सामाजिक समस्याओं से अवगत करा सकते हैं| इससे फायदा यह होगा कि बालकों में तेजी से सामाजिक सोच उत्पन्न होगी और वह तब विभिन्न प्रकार के सामाजिक व्यवहारों को सीखने के लिए प्रेरित होगा|

7. निष्कर्ष

सामाजिक वातावरण से अभिप्राय उस प्रक्रिया विशेष से है जिसके फलस्वरुप एक बालक अपने सामाजिक वातावरण के साथ लगातार अंत:क्रिया करते हुए सामाजिक गुणो एवं कुशलताओं को ग्रहण कर उचित सामाजिक संबंध बनाए रखने में सफल रहता है |सामाजिक विकास की प्रक्रिया उस समय से अपना कार्य आरंभ कर देती है जिस समय एक अबोध शिशु का अपनी मां परिवार के सदस्यों तथा अन्य व्यक्तियों के साथ कोई संपर्क सूत्र बनना प्रारंभ हो जाता है| सामाजिक दृष्टिकोण से शिक्षा के दो उद्देश्य होते हैं -सामाजिक नियंत्रण एवं सामाजिक परिवर्तन |पहला उद्देश्य की प्राप्ति के लिए विद्यालय में बच्चों को अपनी सभ्यता और संस्कृति से परिचित कराया जाता है| उसे समाज के मूल्य एवं मान्यताएं बताई जाती है और उनके अनुसार उन्हें आचरण के विविध तरीके बताए जाते हैं| विद्यालय में बच्चे भिन्न-भिन्न लोगों के संपर्क में आते हैं| विभिन्न प्रकृति के अध्यापक एवं बच्चों से उनका संपर्क बढ़ता है और वे एक -दूसरे से परिचित होते हैं इससे बच्चों में दूसरे के अनुसार अपने -आपको ढालने की प्रवृत्ति बढ़ती है| शिक्षा के द्वारा छात्रों की मूल प्रवृत्तियों का उदारीकरण होता है |बच्चे की व्यक्तिगत विभिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए विद्यालय में तरह-तरह के उत्सव एवं बाल सभाएं एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है |नियमानुसार छात्रों को उनमें भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है |इससे शिक्षा छात्रों की मूल प्रवृत्तियों के उदारीकरण में बहुत सहायक करती है| इससे बच्चों का समाजीकरण होता है |

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

संदर्भ

सिंह, अरुण कुमार (2014) "शिक्षा मनोविज्ञान" भारती भवन, ISBN 13:978-81-7709-986-7
मंगल, एस0के0 (2013) "शिक्षा मनोविज्ञान" ISBN-978-81-203-3280-5
पाठक,पी0 डी0 और जोहरी,बी0पी0 (2013) "भारतीय शिक्षा का इतिहास "अग्रवाल पब्लिकेशन, ISBN-978-81-89994-68-6
टंडन, डॉ0 उमा एवं गुप्ता डॉ0 अरुणा (2014):उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक,इलाहाबाद, आलोक प्रकाशन
भटनागर, सुरेश (1979): शिक्षा मनोविज्ञान इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ
भटनागर, सुरेश (1991):आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं,मेरठ, मेरठ पब्लिशिंग हाउस
भदोरिया, अरुणा एवं सारस्वत, रेशमा (2013): भारतीय शिक्षा व्यवस्था का विकास :आगरा, राखी प्रकाशन
माथुर, एस0 एस0 (1994):" शिक्षा मनोविज्ञान" विनोद पुस्तक मंदिर आगरा
भारतीय आधुनिक शिक्षा (शैक्षिक संवाद पत्रिका) नई दिल्ली, एनसीईआरटी
शर्मा, आर0ए0 (1998): अधिगम के विकास के मनोवैज्ञानिक आधार सूर्या प्रकाशन मेरठ
नई शिक्षा नीति 2020
राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005
www.ugc.ac.in
www.nos.org.in